

रहिबर रसिड़े राम जो (१७)

सतिनाम साईं सुख धम जो ॥

आनंद कंद आनन्द जो दाता, अति प्यारो सियराम जो ॥१॥

मन मन्दिर जी दिव्य जोति आ, थिये दर्शन सुन्दर श्याम जो ॥२॥

रस जो धमु प्रेम परिपूरणु सारु यजुर रिग साम जो ॥३॥

शरिध भगति जो बीजु मनोहर आश्रयु दिलि आराम जो ॥४॥

हलति पलति जो साथी सचिड़ो इष्ट नेही निष्काम जो ॥५॥

दर्द वन्दन दिल आहि दुलारो रहिबरु रसिड़े राम जो ॥६॥

सुख समाजु नेणनि में वसाए लीला ललित ललाम जो ॥७॥

मैगसि नाम जी जैजै बोलियो उत्सव आठों याम जो ॥८॥